दीदी बहुत मेहनत करती है। यह बाबा का राइट हैंड है। देख–रेख करना है। बाप करावनहार है तो बच्चे भी हैं। खुद भी करेगी तो दूसरों से भी करवायेगी। बाप भी खुद भी करते हैं। बच्चों से भी करवाते हैं। भक्तिमार्ग में तो करनकरावनहार का अर्थ जरा भी समझते नहीं हैं। यह बच्चे और बच्चियां समझते हैं कि हम अब बहुत समझदार बन रहे हैं। जैसे साइंस है उससे भी कितने समझदार बनते हैं। यह समझ है ना। अनेक प्रकार की समझ है। बाप फिर नई बात समझाते हैं। दुनियां की समझानी अलग, बाप की समझानी अलग है। बच्चे जानते हैं कि हम 21जन्मों का सुख प्राप्त करते हैं। बाप को ही पतित–पावन कहते हैं। ऐसे ही बाप को याद करते हैं। कहते हैं कि आप ही पतित–पावन हो। परंतु किसे2 यह समझ में नहीं है। पतित–पावन भला कैसे आकर पावन बनावेंगे। बिगर शरीर तो वो मनमनाभव भी नहीं कह सकेंगे। खुद ही आकर समझाता हूं कि मैं ही पतित–पावन हूं। मैं साकार द्वारा आकर समझाता हूं कि तुम पतित से पावन कैसे बनेंगे। सब बच्चों को कहते हैं कि मामेकम् याद करो। आत्मा को शरीर द्वारा ही पार्ट बजाना है। इसलिए आत्मा अभिमानी बनना पड़े। बाप के बीजरूप होने कारण उनमें रचता और रचना की सारी आदि,मध्य,अंत का ज्ञान है। आत्मा बताते हैं कि मैं सुप्रीम आत्मा हूँ। तुम भी आत्माएं सुनती हो। देहीअभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह तो हर एक जानते हैं कि भगवान परमधाम में रहते हैं। जब पावन नहीं बने तब तक कोई भी वहां पर जा सकती नहीं है। वो कहते हैं कि वेद,शास्त्र आदि सबसे भगवान को पाने का रास्ता मिलता है। यह नहीं समझते हैं कि आत्मा पतित है वा पावन बनने पर ही जा सकेगी। तुम मास्टर पतित–पावन हो। पतितों को पावन बनने का रास्ता बताने वाले हो। बाप भी रास्ता बताते हैं ना। हर एक को पुरुषार्थ करना पड़ता है। सतयुग को पावन कलियुग को पतित कहते हैं ;परंतु कैसे पावन बनता है वो तो तुम्हीं जानते हो। बाप कहते हैं मुझे याद करने पर तुम विष्णुपुरी का मालिक बनेंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप भी शरीर द्वारा राय देते हैं। राय पर चलने का ही सभी मनुष्य मात्र पुरुषार्थ करते हैं। मनुष्यों को राय देते हैं कि पावन कैसे बनना है। यह है बाप का पार्ट सो उनको पार्ट जरूर बजाना है। इसमें तो कृपा वा आशीर्वाद की बात ही नहीं। बाप तो बंधा हुआ है बच्चों को पावन बनाने के लिए। यह पार्ट जरूर बजाना है। कृपा वा रहम आदि की बात ही नहीं। मनुष्य परमात्मा को पता नहीं कि क्या2 समझते हैं। बाप तो कहते हैं कि मेरा पार्ट तो बिल्कुल ही सिम्पल है। मनमनाभव कहने का भी मेरा ही पार्ट है। जैसे तुम आत्माओं का पार्ट है वैसे ही मैं परमपिता परमात्मा भी पार्ट बजाता हूं। यह पार्ट बजाते हैं राजाई का। प्रजा प्रजा का पार्ट बजाती है। इसमें .....। मेरे हाथ–पांव यूं2 चलते हैं तो सो भी ड्रामाअनुसार। बच्चों को पुरुषार्थ करवा रहा हूँ। ना चाहते हुये भी बंधा हुआ हूं। टीचर का फर्ज है पढ़ाना। बंधा हुआ हूं पढ़ाने लिए। बच्चे भी बांधे हुये है। पढ़ने के लिए। है तो ड्रामा ही ना। ऐसे नहीं कि ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ होगा। नहीं। पुरुषार्थ तो करना ही है। यह बातें भी बाप समझाकर फिर कह देते हैं कि मुख्य मंजिल है फिर भी (बाप)की ही यात्रा की। बाकी यह चक्र सारा बुद्धि में रखो। यह भी बच्चे समझ गये हैं कि ब्राह्मण ही त्रिकालदर्शी बनते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि आदि में है सतयुग,मध्य में फिर रावणराज्य भक्तिमार्ग शुरू होता है। यह भी अब तुम बच्चों की बुद्धि में है। उठते,बैठते,चलते तुम त्रिकालदर्शी हो। समझते हो समझा सकते हो। यह पढ़ाई है मुख्य। हम त्रिकालदर्शी हैं। त्रिमूर्ति हम नहीं हैं। ऐसे भी नहीं कि भगवान त्रिमूर्ति है। नहीं, भगवान की तो यह त्रिमूर्ति ब्र.वि.शं. रचना है। ऐसे भी नहीं है कि इनको रचते हैं। नहीं। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर का तो सूक्ष्मवतन में पार्ट है। वो रचना है। सा. कराते हैं। ज्ञान देते हैं। यह सूक्ष्मवतन में हैं। भक्तिमार्ग में तो कुछ भी

नहीं समझते हैं। तुम्हीं ––– यह भी समझते हो कि शंकर का कोई इतना पार्ट ही नहीं है। और चित्र जैसे कि अनेक प्रकार के बनाये हैं वैसे ही शंकर का चित्र भी बनाया है। विष्णु और ब्रह्मा ठीक अर्थ सहित बना हुआ है। एक्ट में आते हैं 84जन्मों की। शंकर एक्ट में नहीं आते हैं। यह क्या करते हैं वास्तव में उनका कर्तव्य कोई है ही नहीं ;परंतु भक्तिमार्ग में जैसे कि और चित्र बनाये हैं वैसे ही शंकर का भी बनाया है। अर्थ कुछ है नहीं। बाप बैठ समझाते हैं कि यह सब रांग है। भक्तिमार्ग में कितने मनोमय चित्र बनाये हैं। अर्थ कुछ भी है नहीं। ऐसे भी नहीं है कि शंकर प्रेरणा करता है। बाबा ने समझाया है कि प्रेरणा का कोई अर्थ नहीं होता है। शंकर की कोई एक्ट नहीं है। तुम इन बातों को समझा सकते हो। चार भुजायें ,दो टांगें ऐसे कोई मनुष्य होते नहीं हैं। यह ल.ना. का युगल रूप है। ब्रह्मा स्थापना करते हैं। फिर ल.ना. बनकर पालना करते हैं। विष्णु चार भुजाओं वाला ऐसा कोई होता नहीं है। यह सब है भक्तिमार्ग के बनाये हुये चित्र। बाप बैठकर सब राज समझाते हैं कि ल.ना. का रूप सूक्ष्मवतन में देखने में नहीं आता है। विष्णु को देखकर क्या करेंगे। मूंझ जावेंगे। विष्णु को जाकर खिलाते हो?विष्णु को सूक्ष्मवतन में देखते हो?(नहीं)तो फिर उनको सूक्ष्मवतन में क्यों दिखाते हैं?मम्मा–बाबा को देखते हो वो पार्ट बजाते हैं। विष्णु को ,शंकर को देखते हो?(नहीं)। विष्णु सूक्ष्मवतन में तब क्या करते हैं?विष्णु क्या है?बहुत चित्र हैं जिनमें तो कोई भी अर्थ नहीं है। समझानी दे देकर उनको भी उड़ा देंगे। शिवशंकर इकट्ठा कहां देखेंगे?सूक्ष्मवतन में शंकर नहीं है। बैल नहीं है। सर्प वहां पर होता नहीं है। फिर कैसे कहेंगे कि सूक्ष्मवतन में शंकर होता है। उनका तो कोई पार्ट है नहीं। चित्र बनाते हैं तो बाबा समझाते हैं कि यह विनाश कराते हैं,यह प्रेरक है ;परंतु तुम जानते हो कि वो साइंस सीख रहे हैं। तुम्हारे लिए विनाश जरूर होना ही है। शंकर क्या करते हैं?अभी तुम ब्राह्मण पढ़ते हो। सतयुग में है प्रवृत्तिमार्ग। कलियुग में है अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग। इस समय तुम समझते हो कि प्रवृत्तिमार्ग सारा खतम हो जाना है। तुम इनसे भी अलग हो जाते हो। हम आत्मायें बाप को याद करते हैं। सभी बच्चे ही बच्चे पढ़ रहे हैं। तुम तो वास्तव में सभी स्टुडेंट हो। प्रवृत्ति मार्ग तुमने खतम कर लिया है। लोक–लाज आदि कुल की मर्यादा आदि सब कुछ छोड़ दी। सब बातों से तुम उपराम होते रहते हो। हम आत्मा हैं। हमको शरीर को छोड़कर जाना है। प्रवृत्ति मार्ग को भूल जाना है। जो कुछ भी है उनको भूल जाना है। अब बाप से योग लगाते हैं। तुम्हारा कनैक्शन बाप से है। बाप कहते हैं कि पुरानी दुनियां को भूल कर मुझे याद करो। अपने को देह से न्यारा समझो। अविनाशी बाप को याद करो और सब कुछ भूल जाना है। सिवाय बाप के और कोई चीज याद नहीं आवे। यह ज्ञान अभी तुमको ही मिलता है। फिर प्रारब्ध जाकर भविष्य में भोगें। जैसे2 पढ़ेंगे उसी अनुसार आकर पद पावेंगे। यह ज्ञान की बातें बुद्धि में रहती हैं। ड्रामा में नूंध है। आत्मा में अविनाशी पार्ट है। तुम्हारी तो है याद की योग की यात्रा। यहां पर से तुम राजाई के संस्कार ले जाते हो। फिर इस पढ़ाई का पार्ट खतम हो जावेगा। आत्मा को तो सारा पता होना चाहिए ना। तुम सभी अपने2 पार्ट को जानते हो। बाप कहते हैं कि देह को भूल जाना है। फिर पढ़ाई बंद हो जावेगी। बाबा तो चले ही जावेंगे। साथ2 में तुमको भी ले जावेंगे। फिर पढ़ाई होगी बंद। फिर आत्मा शांतिधाम में चली जावेगी। फिर पढ़ाई अनुसार ही अपना पार्ट आकर रिपीट करेंगे। यह चक्र समझकर कर्मातीत अवस्था को पाना है। कितने ढेरों बच्चे हैं। तुम टीचर बनकर कतनों को पढ़ाते हो। फिर कोई तो टीचर बनते हैं कोई बनते ही नहीं हैं। ना बनने वाले तो फिर कम पद ही पाते हैं। अब तो बहुत ढेर के ढेर टीचर बनेंगे। जो टीचर नहीं बनेंगे वो कम पद पावेंगे। अच्छा, हर प्रकार के वैरायटी फ्लावर .....वाले बच्चों को फूल बनाने वाले बेहद के रुहानी बाप बापदादा वा मात–पिता का बहुत2 यादप्यार और स्वीट गुडनाइट।